उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

सत्यमेव जयते
Goverment of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति

मूल्य प्रवाह

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

वेबसाइटः www.ugc.ac.in

© विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

नवम्बर, 2019

सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002 द्वारा प्रकाशित।

चंदू प्रेस, डी– 97, शकरपुर, दिल्ली– 110092, फोनः +919810519841, 011–22526936

ई–मेलः **chandupress@gmail.com** द्वारा डिजाईन और मुद्रित किया गया।

çkDdFku

किसी सभ्य समाज की प्रगति और विकास के लिए मानव मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति अनिवार्य हैं। उच्चतर शैक्षिक संस्थान (HEI) वास्तव में एक सुदृढ़ समाज बनाने के लिए उत्तरदायी हैं। अतः उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति से समर्थ उच्च गुणवत्ता युक्त व्यवहार और वातावरण बनाने की आवश्यकता है। विस्तृत विचार–विमर्श और परामर्श के पश्चात, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति ने "मूल्य प्रवाह–उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचार नीति का प्रतिष्ठान" नामक दिशानिर्देश तैयार किया है।

दिशानिर्देश में मानव मूल्यों और व्यावसायिक आचार नीति की वैचारिक रूपरेखा, विभिन्न आंतरिक और बाह्य हितधारकों के मूल्य आधारित एवं आचारनीति व्यवहारों, कार्यान्वयन और निगरानी योजना को शामिल किया गया है। सभी हितधारकों से अपेक्षा की जाती है कि वे मूल्य आधारित संस्थानों के विकास पर बल दें।

मैं विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष और सदस्यों के प्रति दिशानिर्देशों को तैयार करने में उनके बहुमूल्य प्रयासों और कठिन परिश्रम के लिए अपना हार्दिक धन्यवाद और कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मैं डॉ. (श्रीमती) रेणु बत्रा, अपर सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का भी उनके प्रयासों के लिए साधुवाद देता हूँ जिनके कारण यह कार्य पूरा हुआ।

मुझे उच्चतर शैक्षिक संस्थानों के कुलपतियों/निदेशकों/प्राचार्यों के साथ दिशा–निर्देश साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि ये दिशा–निर्देश उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और आचारनीति की संस्कृति को बढ़ावा करने में सहायता करेंगे। विश्वविद्यालयों के कुलपतियों/संस्थानों के निदेशकों तथा महाविद्यालयों के प्राचार्यों से आग्रह है कि वे इन दिशानिर्देशों को कार्यान्वित करने हेतु उपयुक्त कदम उठाएं।

संविधान दिवस
26 नवम्बर, 2019
नई दिल्ली

(प्रो० धीरेन्द्र पाल सिंह)
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ सं.
1	v/;k; – *I* प्रस्तावना	7
2	v/;k; – *II* मानव मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति	9
3	v/;k; – *III* हितधारकों के लिए मूल्य और आचारनीति	13
4	v/;k; – *IV* उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति का हितधारक–वार कार्यान्वयन	18
5	v/;k; – *V* सुदृढ़ीकरण	21

"एक शिक्षण विश्वविद्यालय केवल इसका आधा कार्य ही निष्पादित कर पाएगा यदि वह इसके छात्रों की हृदय–शक्ति को उसी उत्सुकता के साथ विकसित नहीं करना चाहता है जिसके साथ यह उनकी मस्तिष्क–शक्ति का विकास करता है। अतः प्रस्तावित विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्यों में से एक उद्देश्य युवाओं का चरित्र निर्माण रखा गया है। यह न केवल मनुष्य को इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, व्यापारियों, धर्म शास्त्रियों के रूप में, बल्कि उच्च चरित्र, संभावना एवं सम्मान के पुरुषों के रूप में भी बदलना चाहता है, जिनके जीवन के आचरण दर्शाएँगे कि उनमें एक महान विश्वविद्यालय की विशिष्टता है"।

–पंडित मदन मोहन मालवीय

अध्याय – I

çLrkouk

1-1 vkeq[k

मानवीय मूल्य और आचारनीति सामान्य रूप से व्यक्ति या संगठन या समाज की गुणवत्ता को परिभाषित करते हैं। मूल्यों और आचारनीति के अभ्यासी इन पाठों को स्वयं शुरू किए गए प्रयासों और जीवन के अनुभव जो कि सीखने की सबसे बड़ी प्रयोगशाला है और शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से सीखते हैं जहां वे पढ़ने के लिए जाते हैं। इसलिए शैक्षिक संस्थानों को स्वयं साकार मूल्य और आचारनीतिपरक होने की आवश्यकता है। इस बात पर बल देना अनिवार्य है कि शिक्षा एक सभ्य और गरिमापूर्ण समाज का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। समाज या राष्ट्र की पूरी संरचना इस स्तम्भ पर निर्भर करती है। यदि यह स्तम्भ मजबूत होगा तो समाज सभ्य और समृद्ध होगा। यदि इस स्तंभ में कुछ क्षति होती है, तो समाज अमानवीय चरण में प्रवेश कर सकता है। इस प्रकार, शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों के महत्व पर बल देने की आवश्यकता है। मानवीय मूल्य और आचारनीति मोटर कौशल की तरह नहीं हैं, जिनमें एक बार महारत हासिल कर लेने पर हमेशा महारत बनी रहती है। वे महज कौशल नहीं हैं, वे केवल ज्ञान के क्षेत्र से ही संबंधित नहीं हैं, वे वास्तव में सूक्ष्म समझ और व्यवहार के क्षेत्र से संबंधित हैं। आदिशंकर ने सुझाव दिया कि ''मानवीय मूल्यों के सूक्ष्म पहलुओं को पोषित करने की आवश्यकता होती है और उनको उतनी ही सावधानी से संरक्षित करने की आवश्यकता होती है जैसे कि कोई माँ गर्भ की रक्षा करती है। मूल्य और आचारनीति की प्रकृति कपूर की भांति है– अगर इन्हें ध्यान से संरक्षित न किया जाए तो वे वाष्पित हो जाते हैं।'' इसलिए इस प्रक्रिया पर विचार–विमर्श करने और इसे कारगर बनाने की आवश्यकता है जो शैक्षिक संस्थानों को मानवीय मूल्यों और आचारनीति की संस्कृति से ओत–प्रोत करने में सहायता करता है। ज्ञान शक्ति है, लेकिन मानवीय मूल्यों और आचारनीति के व्यवहार और कार्यान्वयन संस्थानों में सक्रिय संस्कृति से समर्थित कार्योन्मुख की मांग करते हैं।

वर्तमान नीतिगत रूपरेखा उच्चत्तर शिक्षा संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के साथ प्रोत्साहित उच्चगुणवत्ता मूल्यों और पर्यावरण बनाने की आवश्यकता और प्रक्रिया पर बल देती है। इसके पहले भाग में व्यावसायिक आचारनीति के साथ प्रभारित मूल्य आधारित पर्यावरण की स्थापना के उद्देश्यों और संभावित परिणामों की उचित व्याख्या की गई है। इसके दूसरे भाग में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति की संकल्पनात्मक रूपरेखा का विस्तृत वर्णण है। एक शैक्षिक संस्थान विभिन्न हितधारकों के स्तम्भ पर निर्मित होता है। इसके तीसरे भाग में विभिन्न आंतरिक और बाह्य हितधारकों के मूल्य आधारित और आचारनीति व्यवहारों की विस्तृत व्याख्या की गई है। इसके चौथे भाग में प्रचालन संबंधी दिशानिर्देशों का सुझाव देते समय प्रासंगिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और निगरानी पर जोर दिया गया है। मूल्यों और आचारनीति को पोषित और सुदृढ़ करने की आवश्यकता होती है। इस आलोक में, दस्तावेज के अंतिम भाग में संस्थानों में मूल्यों और आचारनीति की संस्कृति को सुदृढ़ करने के तरीके बताए गए हैं। विभिन्न संस्थानों को ऐसी संस्कृति सृजित करने के लिए उनके अभिनव क्रियाकलापों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

1-2 mí' ;

इस नीतिगत रूपरेखा के उद्देश्य उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति को प्रतिष्ठित करना है, जो निम्नलिखित हैं:

(1) समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित करना जिनके हम अभिरक्षक हैं।

(2) व्यावसायिक आचारनीति पर ध्यान केंद्रित करना जो अवांछनीय क्रियाकलापों की तुलना में वांछनीय क्रियाकलापों के व्यापक संकेतक हैं।

(3) आंतरिक और बाह्य हितधारकों के लिए मूल्यों और आचारनीति के व्यापक दिशानिर्देशों को निर्धारित करना।

(4) उच्चत्तर शैक्षिक संस्थानों में मूल्य–आधारित और आचारनीति व्यवहारों के लिए प्रचालन संबंधी दिशानिर्देशों का सुझाव देना जो कार्यान्वयन और निगरानी की दिशा में अग्रसर हों।

(5) उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मूल्य–आधारित और आचारनीति संस्कृति सृजन करने के परिणामों को स्पष्ट करना।

(6) उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और आचारनीति के पोषण के लिए सांकेतिक सुदृढीकरण कार्यक्रमों का सुझाव देना।

1-3 ifj.kke

इस प्रयास का पहला और सबसे महत्वपूर्ण परिणाम मूल्यों और आचारनीति के वातावरण वाले संस्थानों का निर्माण करना है। प्रत्येक भौतिक बुनियादी अवसंरचना, मनोवैज्ञानिक अवसंरचना, ज्ञान अवसंरचना और वित्तीय अवसंरचना को मानवीय मूल्यों और आचारनीति व्यवहारों से आलोकित होने की आवश्यकता है। बड़ी चीजों का जगह पर होना अत्यंत महत्वपूर्ण है लेकिन सबसे छोटी चीजों का अपनी जगह पर होना भी महत्वपूर्ण है। ऐसा पर्यावरण बनाने के लिए, निम्नलिखित पाँच प्रणालियों के सृजन की आवश्यकता है:

(1) समग्र विकास के लिए सीखने की प्रक्रिया।

(2) त्रुटिहीन शासन।

(3) प्रभावी संस्थागत प्रबंधन।

(4) पुरस्कार और दंड की सुस्थापित प्रणाली।

(5) संस्थागत वातावरण जहां 'सही व्यक्ति' आनंद लेते हैं और 'गलत व्यक्तियों' को हतोत्साहित किया जाता है।

> *शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने या कौशल के प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है। इसमें शिक्षितों को मूल्यों की उचित समझ देनी होती है।*
>
> *सर्वपल्ली राधाकृष्णन*

अध्याय – II

ekuoh; eY; vkj 0;kolkf;d vkpkj uhfr

2-1 ekuoh; eY;

मानवीय सभ्यता उन मूल्यों के लिए जानी जाती है जो इसे पोषित और संचालित करते हैं। विभिन्न समय और स्थानों पर, साधुओं, संतों और द्रष्टाओं ने अपने अनुभव के आधार पर, व्यवहार विकसित किए जिनमें मानवीय मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया गया, हालांकि उनके द्वारा उपयोग में लाए गए नाम भिन्न थे, क्योंकि उनकी भाषाएं भिन्न थीं, लेकिन आत्मा एक थी। मानवीय मूल्य वे मूल्य हैं जिन्हें मनुष्य पोषित करते हैं तथा चेतना पूर्वक या किसी अन्य प्रकार से धारण करते हैं और अधिकांश स्थानों और समय में उनको व्यवहार में लाते हैं। मानवीय मूल्य उस क्षेत्र का प्रतिफल है जिसे मानवीय स्वभाव कहा जाता है। इस प्रतिफल में कई मूल्यवान स्वभाव होते हैं जिनमें त्याग सभी मूल्यों की नींव है। गांधीजी ने ईशोपनिषद के स्त्रोत ''त्यक्तं भानुजितं मां ग्रिडाहं कस्यस्विधनं'' पर विचार किया। इसका तात्पर्य है कि भगवान ने इस संसार में सब कुछ बनाया है। इसलिए हमें उसका (संसार) लालच में पड़े बिना और बिना किसी लगाव के कार्य करके त्यागभाव से आनंद लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, इस संसार में कर्म मानवीय जीवन की नींव है। 'त्याग' और 'भोग' ये दोनों शब्द सतह पर विरोधाभासी प्रतीत हो सकते है लेकिन ऐसा नहीं हैं। तपस्या भाव के साथ भोग एकीकरण को पूरा करता है।

गौतम बुद्ध ने स्वयं एवं औरों के प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए राजसी जीवन त्याग दिया। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने वर्षों के ध्यान (meditation) और तप के पश्चात आत्मज्ञान (enlightenment) प्राप्त किया। फिर उन्हें अभिलाषा हुई कि उन्होनें जो ज्ञान अर्जित किया है, समाज के दूसरे लोगों को उसका उपदेश दिया जाए और उनमे प्रचालित किया जाए। ऐसा सोचते हुए उन्हें महसूस हुआ कि उन के मन की गहरी यादों में किसी किस्म का अहंकार छुपा हुआ है जो उन्हें यह सोचने के लिए विवश कर रहा था कि केवल वही प्रबुद्ध है और अन्य लोग अज्ञानी हैं। बुद्ध ध्यान करने के लिए पुनः जंगल में लौट आए। ध्यान के पश्चात, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उन्हें जाना चाहिए और उनके ज्ञान को उनके अहंकार से नहीं बल्कि उनके प्रति उनके प्रेम और परिणामी करूणा से समाज के अन्य सदस्यों के साथ साझा करना चाहिए, क्योंकि वे सभी उनके लोग थे। यहाँ से सत्य (truth), प्रेम (love) और करुणा (compassion) उनके दर्शन और जीवन के अभिन्न मूल्य बन गए। इस सब के पीछे उनकी शक्ति, पारिवारिक संबंधों और राजसी सुविधाओं का त्याग था। त्याग और सेवा (renunciation and service), सत्य (truth), प्रेम (love) और करुणा (compassion) की नींव हैं क्योंकि वे स्वयं के साथ–साथ दूसरों के जीवन की प्रतिबद्धता दिखाते हैं।

वैदिक/उपनिषदिक प्रवचन विभिन्न स्थानों में मूल्यों की बात करते हैं जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं: सत्य (Truth), धर्म (Righteousness), तप (Austerity), त्याग (renunciation), दम (Restrain), दया (Mercy), दान (Charity) और शम (Tranquility)। इन मूल्यों को अलग–अलग नाम दिया गया है। सामान्य रूप से शिक्षा और विशिष्ट रूप से उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य इसके हितधारकों, विशेष रूप से उच्चतर शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षकों और शिक्षार्थियों को मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के बारे में जागरूक बनाकर मानवीय क्षमता के वास्तविकीकरण को सरल बनाना होता है। प्रमुख मूल्यों पर संक्षेप में निम्नानुसार चर्चा की गई है:

प्रेम और करूणा (Love and Compassion): प्रेम सर्वव्यापी जीवन ऊर्जा है। यह दूसरों के लिए ईमानदारी से देखभाल, दया, सहानुभूति और करुणा में अपनी अभिव्यक्ति पाता है और इसमें कोई शर्त नहीं होती है। सच्चा प्यार करुणा की ओर ले जाता है। इसे उदारता (Generosity), दया (Mercy) और दान (Charity) के मानवीय कार्यों के संचालन में देखा जा सकता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा के रूप में, "सभी को प्रेम" की अवधारणा पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में मानने के विचार की ओर ले जाती है।

शांति (Peace): शांति के दायरे में व्यक्तिगत और विश्व स्तर पर शांति शामिल है। विश्व शांति के लिए, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र स्तर पर शांति अनिवार्य है। मार्कस ऑरेलियस ने कहा, ''वह जो स्वयं के साथ सामंजस्य में रहता है, ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य में रहता है।'' महात्मा गांधी ने टिप्पणी की थी, ''हमेशा मनन, वचन और कर्म के पूर्ण सामंजस्य का लक्ष्य रखें। हमेशा अपने विचारों को शुद्ध करने का लक्ष्य रखें और सब ठीक हो जाएगा।''

सत्य (Truth): सत्य शाश्वत और अपरिवर्तनशील है, क्योंकि यह परम और अपरिवर्तनीय वास्तविकता से संबंधित है। *तैत्तिरीय उपनिषद* में शिक्षक, शिष्य को दीक्षांत संदेश देते हुए कहते हैं, 'सत्यम वद' (सत्य बोलो)। यह सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और नेक नीयती, शुद्धता, सटीकता और निष्पक्षता, निडरता और अखंडता द्वारा चिह्नित होता है। इसके व्यक्ति परक या सापेक्ष सत्य के रूप में कई पहलू हो सकते हैं कि क्यों लोग 'मेरे सत्य' और 'तुम्हारे सत्य' से चिपके रहते हैं जिससे कई बार संघर्ष हो जाता है। हालांकि जब स्थायी सत्य, जो कि अपेक्षाकृत दृढ़ होता है, खोज करते हैं, सामान्य बुद्धि, अंतःज्ञान, न्याय के मूल्यों, ज्ञान की खोज, जांच और संवाद की भावना पोषित होती है और इसमें वृद्धि होती है। पेशेवर जीवन में, सत्य की सबसे सरल अभिव्यक्ति ईमानदारी में है जिसे काम करने की प्रतिबद्धता के रूप में देखा जा सकता है।

अहिंसा (Non - Violence): अहिंसा का अर्थ है किसी की हत्या नहीं करना। अहिंसा किसी भी सत्ता, जीवित या निर्जीव को किसी के विचार, भाषण या कार्य के माध्यम से जानबूझकर कोई नुकसान नहीं पहुँचाने का परिणाम है। इसमें इस तथ्य के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता होती है कि सत्ता के सभी रूपों में जीवन होता है और वे परस्पर संबंधित होते हैं। अहिंसा का अभिप्राय घृणा से संयम और सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और करुणा का भाव रखना है।

धार्मिकता (Righteousness): धार्मिकता मुख्य मानवीय मूल्यों और मानवीय अस्तित्व की भी रीढ़ है। इसमें हर चरण में औचित्य और शिष्टाचार के अभ्यास द्वारा जीवन और कार्य का आचरण शामिल है। सरल भाषा में, इसे 'सही आचरण' द्वारा चिह्नित किया जाता है। इसमें आचारनीति दिशा–निर्देश, आचारनीति व्यवहार और नैतिक धार्मिकता शामिल है। इसका सार इस कहावत में शामिल है: ''अच्छा करो, अच्छा देखो और अच्छा बनो''। भारतीय संस्कृति धर्म की अवधारणा के इर्द–गिर्द घूमती है जिसका तात्पर्य है जिसे धारण किया जाता है वही धर्म है। (जो करने योग्य या कायम रखने योग्य है) जिसमें कार्य समय (काल), स्थान (देश) और प्रतिष्ठा या सामाजिक स्थिति (कुल) की मर्यादा द्वारा निर्देशित होता है।

त्याग या बलिदान (Renunciation or Sacrifice): त्याग की दो पूर्व शर्तें हैं: स्वार्थ के बिना सभी जीवों की देखभाल और प्रेम। त्याग तभी आरंभ होता है जब स्वार्थ समाप्त होता है। त्याग जीवन की समस्याओं से भागना नहीं है। इसके अलावा, कर्म के बिना त्याग का अर्थ परजीवी जीवन है। इसके अलावा कार्य के साथ त्याग आरंभ होने पर सेवा आरंभ होती है। अपने सरलतम रूप में त्याग को तपस्या, भाव नियंत्रण और निस्वार्थता में देखा जाता है।

सेवा (Service): जब दूसरों के लिए प्यार और करुणा और दूसरों के लिए प्रेम से बलिदान की स्वेच्छा कार्य का रूप ले लेता है तो यह सेवा बन जाता है। सेवा केवल तभी संभव है जब कोई दूसरों को किसी अपने की तरह प्रेम करता है, न कि दूसरे की तरह। सेवा का मूल्य जाति, पंथ, वंश, क्षेत्र या धर्म की तर्ज पर बिना किसी शर्त या भेदभाव के समानता की मांग करता है।

मानवीयमूल्य मानव जाति की गहन नैतिक आकांक्षाएं हैं जो मानव संस्कृति का आधार हैं तथा जो व्यक्तियों एवं समाज में निहित रहता है। एक अच्छा इंसान बनने के लिए उन्हें आत्मसात् करने और सचेत रूप से अभ्यास करने की आवश्यकता है ताकि वह एक मानव के रूप में अपनी क्षमताओं को पहचान सके।

मूल्यों को व्यवहारों के माध्यम से सीखना होगा। इसलिए, प्रशासक और उच्चतर शिक्षा के शिक्षकों को यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उन्हें सामान्य रूप से उनके साथियों और शिक्षार्थियों द्वारा देखा जा रहा है और अनुसरण किया जा रहा है और वे (साथी/शिक्षार्थी) उनका (वरिष्ठों एवं साथी शिक्षार्थियों) अनुसरण करके मूल्यों को सीख रहे हैं। इसलिए उच्चतर शैक्षिक संस्थानों के अंदर और आसपास ऐसा वातावरण होना चाहिए जो मूल्य शिक्षा के अनुकूल हों और घर एवं कार्य स्थल पर पेशेवर आचारनीति के साथ जीवन एवं कार्य में गुणात्मक परिवर्तन लाए। उच्चतर शिक्षा का ध्येय ज्ञान है और ज्ञान का ध्येय जीवन के बारे में जानना है। जीवन का ध्येय खुशी है, हालांकि कुछ लोग सफलता को ध्येय मानते है। यह जरूरी नहीं कि सफलता से निश्चित रूप से खुशी या महानता हासिल हों। खुशी और महानता तभी हासिल होती हैं जब सफलता मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति से जुड़ी हो। इस प्रकार, मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचार नीति परिवर्तनकारी अधिगम और खुशी और महानता के जीवन की लंबी यात्रा में अपरिहार्य कदम हैं।

2-20;kolkf;d vkpkj uhfr%

मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति आपस में गुथे हुए हैं। मूल्यों का संबंध मुख्य विश्वास या आकांक्षा के साथ व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास से है जो अभिवृत्ति (Attitude) और कार्यों को मार्ग दिखाते हैं या प्रेरित करते हैं। आचारनीति को आचरण के मानकों के रूप में निरूपित किया गया है जो यह बतलाते हैं कि कैसे किसी व्यक्ति को सही और गलत सिद्धांतों से दृष्टिगोचर होने वाले नैतिक कर्तव्यों और गुणों के आधार पर व्यवहार करना चाहिए। व्यावसायिक आचारनीति का संबंध सही या गलत की अवधारणा और रूपरेखा से होता है जैसा कि एक व्यावसायिक संगठन, निष्पादन नीतियों और व्यवहारों के लिए लागू होता है। यद्यपि, शिक्षा इसके व्यावहारिक अर्थों में व्यावसायिक नहीं है, तथापि व्यावहारिक उद्देश्य के लिए हम इसे एक व्यवसाय के रूप में संबोधित करेंगे ताकि उच्चतर शिक्षा में आचारनीति की संस्थागत रूपरेखा को प्रस्तुत किया जा सके।

मानवीय मूल्य, व्यावसायिक आचारनीति और विधिक रूपरेखा तीन मुख्य घटक हैं जो किसी संगठन में वांछनीय मानव व्यवहार और निर्णय लेने के दिशानिर्देशों को निर्देशित करते हैं। यदि विधिक रूपरेखा अक. ले ही मानव व्यवहार और निर्णय लेने की प्रक्रिया को निर्देशित कर पाती, तो संगठनात्मक संदर्भ में मूल्यों और आचार नीति की कोई आवश्यकता नहीं होती। विधिसम्मत होना न्यूनतम आवश्यकता है, हालांकि, यह अपर्याप्त है। कानून संगठनात्मक कार्यकलापों का आधार और सार है लेकिन हमें इसके ऊपर एक संरचना का निर्माण करने की आवश्यकता है। दंड के भय से गैर–कानूनी नहीं बनना मानव सत्ता का अशिष्ट स्तर है। स्वभाव से कानूनों का पालन करना हमेशा श्रेयस्कर होता है, न कि केवल शब्दों में। कानून की दुनिया से ऊपर, आचारनीति और मूल्यों का खुला आकाश है जहां मानव क्रियाकलाप इसलिए किए जाते हैं कि संसार को और अधिक समृद्ध, समानता और न्याय से भरपूर बनाया जा सके और यह सौंदर्य बोध तथा खुशी दोनों से भरा हो।

व्यावसायिक आचारनीति का संबंध इस बात से है कि व्यवसाय के संबंध में वांछनीय कार्य क्या हैं और अवांछनीय कार्य क्या हैं। कई संगठनों के पास कॉर्पोरेट शासन के दिशानिर्देश और उनकी आचारनीति संहिता हैं। कुछ संगठनों ने आचारनीति अधिकारियों की भी नियुक्ति की है। संसार भर के संगठनों में आचारनीति प्रशिक्षण का प्रसार हुआ है। आचारनीति में उनके लक्ष्यों में ये शामिल हैं: नैतिक दायित्व को प्रोत्साहित करना, समस्या को हल करने के कौशल को विकसित करना और सहनशीलता या अस्पष्टता को कम करना। आचारनीति शायद सिखाई नहीं जा सकती (जब तक कि ग्रहण करने वाला श्रवण योग में नहीं है) लेकिन उदाहरण के द्वारा सीखी जा सकती है। भगवत् गीता में कृष्ण कहते हैं: "जो भी योग्य व्यक्ति करता है, दूसरे व्यक्ति भी वही करते हैं। वह जो भी मानक स्थापित करता है/करती है, सामान्य तौर पर अन्य व्यक्ति उसका पालन करते हैं।'' इसका तापार्य है: वरिष्ठों की अधिक भूमिकाएँ होती हैं। आप क्या कह रहे हैं कोई नहीं सुन रहा है लेकिन हर कोई देख रहा है कि आप क्या कर रहे हैं। शब्दों में संवाद करने की शक्ति कम होती है। क्रियाकलापों में संवाद करने की अधिक शक्ति होती है। कहा गया है

''ज्ञान भार क्रिया विना'' अर्थात् मूल्यों और आचारनीति का ज्ञान केवल मृत बोझ है यदि इसे व्यवहार में कार्यान्वित नहीं किया जाता है। अतः आचारनीति को "मॉडलिंग" के माध्यम से सीखा या सीखने के लिए बनाया जा सकता है। नेता जो कहते और करते हैं, उससे वे आचारनीति के उदाहरण स्थापित करते हैं। इसके अतिरिक्त, आचारनीति प्रशिक्षण भी एक संभावना है और अभीष्ट परिणाम देता है।

मानव में मूल्य बचपन में स्थापित हो जाते हैं लेकिन मूल्य–आधारित और आचारनीतिगत निर्णयों के पक्ष में मूल्य जागरूकता, आचारनीति जागरूकता और तर्क कौशल में जीवन भर सुधार किया जा सकता है। मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति संयुक्त रूप में सही आचरण, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करती है। आचारनीतिगत निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति स्वयं के बारे में कैसा महसूस करता है, नैतिक विकास के चरण और संगठनात्मक वातावरण। ब्लैंचर्ड और पील का सुझाव है कि ''आचारनीति व्यवहार आत्म–सम्मान से संबंधित हैं''। जो व्यक्ति स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करते हैं, उनके पास बाह्य दवाब का सामना करने के लिए क्या है और वही करना है जो सही है, न कि वह करना जो सामयिक, लोकप्रिय, या आकर्षक है।

हालांकि, आचारनीति व्यवहार के लिए, केवल व्यक्ति (यों) को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। नैतिक विकास और आत्मसम्मान के अतिरिक्त, संगठनात्मक वातावरण एक तीसरा कारक है जो आचारनीति दृष्टि या पद्धतियों या निर्णयों में योगदान देता है। यही कारण है कि संगठन में एक आचारनीति वातावरण बनाने की आवश्यकता है। यदि संगठनात्मक वातावरण में आचारनीति व्यवहार को बढ़ावा दिया जाता है, तो व्यक्तिविशेष आचारनीति संबंधी अधिक निर्णय लेते हैं और न होने पर विपरीत होता है। शोध से पता चलता है कि अधिक अस्पष्ट रूप से वर्णित आचारनीति विवरण संगठनों में आचारनीति व्यवहार के लिए कम योगदान देती हैं और स्पष्ट एवं संक्षिप्त आचार नीति संगठनों में आचारनीति व्यवहारों के लिए और अधिक योगदान देते हैं।

आचारनीति पर चर्चा में, यह देखना प्रासंगिक हो सकता है कि अनैतिक आचारनीति पद्धतियाँ कैसी दिखाई देती हैं। भारतीय संगठनों के संदर्भ में एक सर्वेक्षण में मानव संसाधन प्रबंधकों द्वारा कुछ अनैतिक आचारनीति देखी गई हैं ये हैः– पक्षपात से काम पर रखना, प्रशिक्षण या पदोन्नति में भेदभाव, मित्रता के कारण भुगतान में अंतर की अनुमति, यौन उत्पीड़न, पदोन्नति में लैगिंक भेदभाव, असंगत रूप से अनुशासन का उपयोग करना, गोपनीयता नहीं बनाए रखना, प्रतिपूर्ति में लिंग भेद, मूल्यांकन में गैर–निष्पादन कारकों का उपयोग, व्यक्तिगत लाभ के लिए विक्रेताओं के साथ अनैतिक व्यवस्था और भर्ती और काम पर रखने में लिंग भेदभाव। भारतीय संगठनों में सर्वेक्षणों के आधार पर कुछ दिशानिर्देशों का सुझाव है कि प्रशासन पारदर्शी होना चाहिए, निर्णय सार्वजनिक हित में लिया जाना चाहिए, प्रशासकों को अपनी जाति, समुदाय और भाषा से परे होना चाहिए, भ्रष्ट को दंडित किया जाना चाहिए, पदाधिकारियों को भेदभावपूर्ण विशेषाधिकार नहीं दिया जाना चाहिए, सभी स्तरों के व्यक्तियों को सोचने और अपनी सलाह उनके परामर्श स्वतंत्र रूप से देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, और पूरे प्रशासन को स्वयं या अन्य संगठनों के माध्यम से गरीबी के संकट से निपटने के लिए तैयार होना चाहिए। भारतीय संदर्भ में विभिन्न अध्ययनों का सुझाव है कि संगठन निम्न तरीके से नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित कर सकते हैं इस प्रत्याशा को बतलाकर कि कर्मचारी नैतिकता की दृष्टि से सार्थक व्यवहार करेंगे। शीर्ष पदों पर उन व्यक्तियों को काम पर रखकर जो अच्छे उदाहरण स्थापित करते हैं। आचारनीति व्यवहार को पुरस्कृत कर और अनैतिक आचारनीति व्यवहार को दंडित कर, कर्मचारियों को आचारनीति निर्णय लेने के मूलभूत साधनों के बारे में शिक्षा देकर और आचारनीति संबंधी विषयों की चर्चा को बढ़ावा देकर।

पृथ्वी को सत्य की शक्ति द्वारा संभाला गया है। यह सत्य की ही शक्ति है जो सूर्य को प्रकाशित करती है और वायु को चलाती है। वास्तव में सभी चीजें सत्य पर टिकी हुई हैं।

चाणक्य

अध्याय – III

fgr/kkjdk ds fy, eY; vkj vkpkjuhfr

किसी संस्थान के लक्ष्य और दूरदर्शिता की सफलता इसके प्रतिबद्ध प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों के मूल्य–आधारित आचारनीति व्यवहार द्वारा संचालित होती है। इस प्रकार, किसी संस्थान को हितधारक समूहों के दैनिक संवाद एवं क्रियाकलाप में मुख्य मूल्य और आचारनीति व्यवहार को आत्मसात करने के लिए प्रयास करना चाहिए। किसी संस्थान के इन हितधारकों, चाहे वे प्राध्यापक, छात्र, प्रशासक या अन्य हैं, को निम्नलिखित मुख्य मूल्यों द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिएः

3-1 fgr/kkjdk ds fy, eY; vkj vkpkjuhfr

(1) v[kMrk& न्यायसंगत तरीके से और ईमानदारी, विश्वास, पारदर्शिता और निष्पक्षता के सिद्धांतों के अनुसार कर्तव्यों का आचरण करना।

(2) U;kflrk& किसी संस्थान के भीतर समूह की भागीदारी और जाँच एवं संतुलन को सुनिश्चित करते हुए कुशल, आचारनीति और प्रतिबद्ध तरीके से कार्य करना।

(3) fu"Bk& गलती को समायोजित करने के लिए खुलेपन और विश्वास के वातावरण को सक्षम करना और व्यक्ति विशेष को अपने कार्य की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करना।

(4) lekos'ku– किसी संस्थान में शिक्षा, रोजगार, पदोन्नति और अन्य कार्यकलापों को बढ़ावा देने के लिए मानकों, नीतियों और प्रक्रिया को अपनाना और किसी व्यक्ति विशेष या समूह के खिलाफ किसी भी भेदभाव के बिना समान अवसर सुनिश्चित करना।

(5) çfrc)rk & नियत समय और नियामक सीमाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए किसी के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को विकसित करते समय संस्थान के लक्ष्य और दूरदर्शिता को समर्पित करना।

(6) lEeku& परस्पर सम्मान, भरोसे और गुणवत्ता के आदान–प्रदान का वातावरण बनाने के साथ–साथ संस्थान के पदाधिकारियों और लाभार्थियों द्वारा उचित सहभागिता का होना।

(7) lnHkko& हितधारकों के बीच सहिष्णुता, चर्चा और क्षमाभाव की संस्कृति के माध्यम से विविधता और आपसी मतभेदों को संतुलित करना।

> ***मूल्य वह प्रक्रिया है जो हमें सत्यम शिवम सुंदरम को महसूस करने में सक्षम बनाती है।***
>
> ***महात्मा गांधी***

(8) viukiu& सभी को सुरक्षित, समर्थित, स्वीकृत और समावेशी महसूस कराने के लिए संस्थान की साझा भविष्य दृष्टि को पोषित करना।

(9) lrrrk& आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक, संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करना ताकि दीर्घकालिक और सुरक्षित भविष्य प्राप्त किया जा सके।

3-2 fo'ofo|ky; Lrjh; 'k{kf.kd ç'kklu

इसमें कुलपति, प्रो कुलपति/मुख्याधिष्ठाता (रेक्टर), विभिन्न संकाय के डीन विभागाध्यक्ष, संस्थान के निदेशक, प्रॉक्टर, कुलसचिव, वित्त अधिकारी, शैक्षणिक सांविधिक निकाय इत्यादि शामिल होंगे।

प्राधिकारी

1. उच्चतर शैक्षिक संस्थान के मुख्य शैक्षणिक और प्रशासनिक अधिकारी के रूप में यह देखने के लिए उत्तरदायी होगा कि उच्चतर शिक्षा संस्थान के अधिनियमों/विधानों/अध्यादेशों और विनियमों के प्रावधानों का विधिवत पालन किया जाता है और विश्वविद्यालय के कार्य में उनका सख्ती से अनुपालन किया जाता है।
2. उच्चतर शैक्षिक संस्थान के लिए लागू सरकार के कानूनों, नियमों और विनियमों का अनुपालन करेगा।
3. नीति निर्माण, परिचालन प्रबंधन, मानव संसाधनों के इष्टतम उपयोग और पर्यावरण एवं सततता की सोच के माध्यम से उच्चतर शिक्षा संस्थान को प्रेरणादायक और प्रेरक मूल्य–आधारित शैक्षणिक और कार्यकारी नेतृत्व प्रदान करेगा।
4. जवाबदेही, पारदर्शिता, निष्पक्षता, ईमानदारी, आचारनीति के उच्चतम स्तर और निर्णय लेने वाला आचरण करेगा जो उच्चतर शैक्षिक संस्थान के हित में है।
5. राष्ट्रीय विकास के लिए सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता (Agent) के रूप में कार्य करेगा और इसलिए, शिक्षण, सीखने, अनुसंधान और उच्चतर शैक्षिक संस्थान के लिए अधिकतम सीमा तक क्षमता के विकास के अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास करेगा।
6. उच्चतर शैक्षिक संस्थान के उद्देश्यों और नीतियों का पालन करेगा और उनके चालू मूल्यांकन और सुधार में रचनात्मक योगदान देगा।
7. अभिलेखों और अन्य संवेदनशील मामलों की गोपनीयता बनाए रखेगा।
8. कार्य संस्कृति और आचारनीति को बढ़ावा देने का प्रयास करेगा, जो राष्ट्र और समाज के लिए गुणवत्ता, व्यावसायिकता, संतुष्टि और सेवा को पूरा करता है।
9. वित्तीय और अन्य संसाधनों के किसी भी दुरुपयोग से बचेगा।
10. किसी भी व्यक्ति, समूह, निजी व्यवसाय, या सार्वजनिक अभिकरण (एजेंसी) से कोई भी उपहार, एहसान, सेवा या अन्य वस्तुओं को स्वीकार नहीं करेगा, जो उसके कर्तव्यों के निष्पक्ष निष्पादन को प्रभावित कर सकता है।

3-3 'kklh fudk;

शासी निकाय का कार्य यह सुनिश्चित करना है कि संगठन इसके समग्र उद्देश्य को पूरा करता है, उनके अभिष्ट परिणामों को प्राप्त करता है और एक कुशल, प्रभावी और आचारनीति तरीके से संचालित करता है।

lnL;

1. उच्चतर शैक्षिक संस्थान के सर्वोत्तम हित में काम करेंगे।
2. अपने उत्तरदायित्वों को निभाने में साथी सदस्यों के साथ मिलकर काम करेंगे।
3. संस्थान के अभिष्ट परिणामों को प्राप्त करने के लिए हर समय ईमानदारी और सद्भाव से कार्य करेंगे।
4. सूचना की गोपनीयता बनाए रखेंगे।

3-4 ç'kklfud@lgk;d de|pkjh

ç'kklfud@lgk;d de|pkjh

1. शासकीय निर्णयों और नीतियों को ईमानदारी और निष्पक्षता से कार्यान्वित करेंगे ताकि निष्पादन के उच्चतम संभव मानकों को प्राप्त किया जा सके।
2. कर्मचारियों को उनकी दक्षता को अधिकतम बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
3. ऐसी स्थितियां बनाएंगे जो सामूहिक कार्य को प्रेरित करें।
4. वास्तविक शिकायतों के निवारण के लिए तत्काल कार्य करेंगे।
5. अभिलेखों और अन्य संवेदनशील मामलों की गोपनीयता बनाए रखेंगे।
6. सहकर्मियों के साथ यथा उपयुक्त सहयोग और संपर्क रखेंगे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों को एक सुसंगत और व्यापक शैक्षिक सेवा प्राप्त हो।
7. संस्थान की संपत्ति की देखभाल करेंगे।
8. अनुकूल वातावरण को सुविधाजनक बनाएंगे।
9. किसी भी प्रकार के भेदभाव से बचेंगे।
10. रिश्वत स्वीकार नहीं करेंगे या किसी भी भ्रष्ट आचरण में लिप्त नहीं होंगे।
11. निर्धारित कार्य को समय–सीमा में पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

3-5 de|pkjh l?k

de|pkjh l?k

1. विकासात्मक क्रियाकलापों के लिए प्रशासन का समर्थन करेंगे।
2. संवेदनशील मुद्दों को गरिमापूर्ण तरीके से उठाएंगे।

3-6 f'k{kd

शिक्षण एक बहुत ही महान कार्य है। छात्रों के चरित्र, व्यक्तित्व और करियर को आकार देने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है

f'k{kd

1. अच्छा आचरण प्रदर्शित करके छात्रों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करेंगे। परिधान, भाषा और व्यवहार के मानक स्थापित करेंगे जो छात्रों के लिए उदाहरण के योग्य हैं।

2. छात्रों के मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेंगे।
3. छात्रों को उनकी क्षमता की पहचान कराने में सहायता करेंगे और परामर्श के माध्यम से उनकी सहायता करेंगे।
4. शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया के लिए अनुकूल वातावरण बनाएंगे और अभिनव प्रथाओं और ज्ञान का सृजन के लिए प्रयास करेंगे।
5. शिक्षण और अन्य कर्तव्यों में समय की पाबंदी का पालन करेंगे।
6. सभी के साथ सभ्य व्यवहार प्रदर्शित करेंगे।
7. किसी भी रूप में छात्र के उत्पीड़न से बचेंगे।
8. संस्थागत विकास में सक्रिय रूप से भाग लेंगे।
9. किसी भी प्रकार के भेदभाव से बचेंगे।
10. छात्रों और अन्य लोगों के मन में मानव मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरण के प्रति सोच मन में बैठायेंगे।
11. सांझी विरासत की समझ विकसित करेंगे।
12. राष्ट्रीय प्राथमिकताओं की योजनाओं/कार्यकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करेंगे।
13. विश्वविद्यालय की बेहतरी के लिए विश्वविद्यालय प्राधिकारियों के साथ सहयोग करेंगे।
14. राष्ट्रीय एकीकरण और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए सक्रिय रूप से काम करेंगे।
15. सामाजिक आवश्यकताओं और विकास के प्रति संवेदनशील होंगे।
16. विश्वविद्यालय के अधिनियम, कानूनों, अध्यादेशों, नियमों, नीतियों, प्रक्रियाओं का पालन करेंगे और इसके आदर्शों, भविष्य दृष्टि, मिशन, सांस्कृतिक प्रथाओं और परंपराओं का सम्मान करेंगे।

3-7 fofHkUu lfefr;ksa ds lnL; ds :i esa ckgjh fo'ks"kK@vkef=r 0;fä

ckgjh fo'ks"kK@vkef=r 0;fä

1. सभी निर्णयों के दृष्टिकोण का समर्थन करेगें जिससे आगे चलकर सदस्यों के बीच कोई शिकायत उत्पन्न न हो।
2. अपनी विशेषज्ञता और निष्पक्ष विचारों के माध्यम से सही निर्णय लेने में सहायता करेंगे।
3. उच्चतम गुणवत्ता और मानकों को प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए संस्थान की मदद करेंगे।

3-8 Nk=

छात्र उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में अपने जीवन के स्वर्णिम भाग का सर्वोत्तम उपयोग सीखने और संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने के लिए अपनी ऊर्जा समर्पित करेंगे।

Nk=

1. विश्वविद्यालय के अधिनियम, कानून, अध्यादेश, नियमों, नीतियों, प्रक्रियाओं का पालन करेंगे और इसके आदर्शों, भविष्य दृष्टि, मिशन, सांस्कृतिक प्रथाओं और परंपराओं का सम्मान करेंगे।
2. शैक्षिक संस्थान में आनंदपूर्वक सीखने के अनुभव के साथ रहेंगे।

3. कक्षाओं में उपस्थित रहने के दौरान समय के पाबंद, अनुशासित और नियमित रहेंगे।
4. अपनी मर्यादा और व्यवहार में शालीनता दर्शाएँगे।
5. शिक्षकों, कर्मचारियों और साथी छात्रों के साथ सम्मान और शिष्टाचार के साथ व्यवहार करेंगे।
6. उच्चतम स्तर के मूल्यों और नैतिकता को प्राप्त करके कनिष्ठ छात्रों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करेंगे।
7. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति, समुदाय, जाति, धर्म या क्षेत्र से संबंधित छात्रों के बीच सामंजस्य बनाए रखेंगे।
8. परिसर और आसपास के क्षेत्र की साफ–सफाई में योगदान देंगे।
9. संस्थागत सम्पत्तियों का सम्मान और देखभाल करेंगे।
10. बाहर के कार्यकलापों (शैक्षिक दौरे या भ्रमण) के दौरान उचित व्यवहार करेंगे।
11. सभी दस्तावेजों में केवल सही जानकारी प्रदान करने में ईमानदारी बरतेंगे।
12. स्वयं के शैक्षिक कार्यों को प्रस्तुत करते समय शैक्षिक ईमानदारी के उच्चतम मानकों को बनाए रखेंगे।
13. सभी छात्रों के लिए सीखने के अनुकूल वातावरण को बनाए रखने में शिक्षकों की सहायता करेंगे।
14. परिसर को रैगिंग मुक्त रखने का प्रयास करेंगे।
15. लैंगिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील होंगे।
16. सामाजिक आवश्यकताओं और विकास के प्रति संवेदनशील होंगे।
17. अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखेंगे और किसी भी तरह के नशे से बचेंगे।

3-9 Nk= l?k

1. सही और समय पर निर्णय लेने लिए प्रशासन का समर्थन करेगा।
2. उचित मुद्दों को गरिमापूर्ण तरीके से उठाएगा।

3-10 fgr/kkjdk vkj vkpkjuhfr d: i e futh lLFkkuk d ekey e 'kf{kd lLFkkuk d çord ¼çekVj½

शैक्षिक संस्थान का प्रवर्तक (प्रमोटर)

1. उच्च गुणवत्ता के शैक्षिक संस्थान स्थापित करेंगे।
2. गुणवत्ता शिक्षा के हित को किसी भी अन्य प्राथमिकता की तुलना में सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखेंगे।
3. सामाजिक रूप से संवेदनशील छात्रों के विकास के लिए सीखने का वातावरण बनाएंगे।

> नैतिक मूल्यों और एक संस्कृति और एक धर्म, इन मूल्यों को बनाए रखना कानूनों और नियमों को बनाए रखने से कहीं बेहतर है।
>
> –स्वामी विवेकानंद

अध्याय – IV

mPprj 'kf{kd lLFkkuksa e ekuoh;eY; vkj 0;kolkf;d vkpkjuhfr dk fgr/kkjd&okj dk;kUo;u

4-1 ekuoh;eY; vkj 0;kolkf;d vkpkjuhfr d dk;kUo;u dh vo/kkj.kk

मानवीय मूल्यों के सिद्धांतों को सामाजिक अधिनियम और मानव जाति के व्यवहार में अन्तर्स्थीपित करने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घोटालों, अंतर–व्यक्तिगत विश्वास में कमी, मूल्य–रहित जीवन शैली, अनैतिक व्यवहार, हितों और अंदरूनी सूत्र के साथ काम का संघर्ष और भाई–भतीजावाद और मध्यस्थता आदि हमें इस निष्कर्ष पर ले जाते हैं कि सब कुछ ठीक नहीं हो रहा है। समाज के सभी सदस्यों द्वारा मामलों के आचरण के लिए नैतिक तरीकों पर पुनः बल देने की अत्यंत आवश्यकता है।

4-2 dk;l ;kstuk d dk;kUo;u dh vko';drk

उच्चतर शिक्षा के महत्वपूर्ण हितधारकों के लिए मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति मन में बैठाने के लिए विभिन्न स्तरों अर्थात व्यक्तिगत स्तर, अंतर–व्यक्तिगत स्तर और अंतरा (Intra)–संस्थागत स्तर पर कार्य योजना कार्यान्वित करने की तत्काल आवश्यकता है।

4-3 f'k{kdksa d fy, dk;kUo;u ;stuk

(1) शिक्षण बिरादरी के लिए मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति पर कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यक्रम।

(2) शिक्षकों के लिए प्रेरण, अभिविन्यास और पुनश्चर्या कार्यक्रम में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के इनपुट डालना।

(3) सद्भाव के लिए अन्य हितधारकों के साथ नियमित आधार पर खुली परस्पर बातचीत।

(4) मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के लिए परामर्श।

(5) कुछ मूल्यों को प्रदर्शित करने के लिए शिक्षकों को पाठ्यक्रम और सह पाठ्यक्रम संबंधी कार्यकलापों में अन्य हितधारकों को शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना।

(6) मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति पर आधारित अंतर्विषयक अनुसंधान करने के लिए शिक्षकों को बढ़ावा देना।

(7) शिक्षकों को अपने छात्रों के बीच आचारनीति और मानवीय मूल्य पैदा करने के लिए एक परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएं देने के लिए प्रोत्साहित करना।

(8) शासकीय पत्राचार में आचारनीति और मूल्य विचारों और सदुपदेशों का उद्धरण देना।

(9) बड़े स्तर पर समाज के लिए आचारनीति और मानवीय मूल्यों पर कार्यक्रम करना।

(10) आचारनीति और मानवीय मूल्यों की पांडुलिपियों और पुस्तकों के संग्रह (पुस्तकालय और ई–पुस्तकालय) के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहन।

4-4 Nk=k d fy, dk;kUo;u ;ktuk

(1) पूर्वस्नातक स्तर पर मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति पर बुनियादी पाठ्यक्रम और स्नातकोत्तर स्तर पर उच्च पाठ्यक्रम लागू करना।

(2) मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति पर प्रसार कार्यक्रम

- छात्रों के लिए प्रशिक्षण, कार्यशाला और अभिविन्यास कार्यक्रम।
- मानवीय मूल्यों के सिद्धांतों पर सौंपा हुआ कार्य और लघु परियोजनाएं।
- समाज में मैत्री–भावना की परंपरा।
- सामाजिक सेवाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना।
- राष्ट्रीय योजनाओं जैसे फिट इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, जल संरक्षण अभियान आदि जैसे कार्यक्रमों में सहभागिता।
- समाजिक, गैर सरकारी संगठनों और व अन्य संगठनों के साथ संपर्क।

(3) मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति को बढ़ावा देना।

- सार्वजनिक स्थानों पर आचारनीति और मानवीय मूल्य विचारों और सदुपदेशों का प्रदर्शन।
- शासकीय पत्र–व्यवहार में आचारनीति और मानवीय मूल्य विचारों और सदुपदेशों को प्रस्तुत करना।
- सद्भाव के लिए अन्य हितधारकों के साथ नियमित आधार पर खुली परस्पर बातचीत।
- मूल्य संवर्धन क्रियाकलापों के लिए वार्षिक कार्य योजना।
- पांडुलिपियों और पुस्तकों का प्रकाशन।
- संग्रह (पुस्तकालय और ई–पुस्तकालय)।

4-5 delpkjh lnL;k d fy, dk;kUo;u ;ktuk

(1) कर्मचारी सदस्यों के लिए मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

(2) कर्मचारी सदस्यों के लिए प्रेरण और पुनश्चर्या कार्यक्रम।

(3) सद्भाव के लिए अन्य हितधारकों के साथ नियमित आधार पर खुली परस्पर बातचीत।

(4) उच्चतर शिक्षण संस्थानों में मैत्री–भावना की परंपरा।

(5) कर्मचारी सदस्यों को अन्य हितधारकों को शामिल कर मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करना।

(6) शासकीय पत्राचार में आचारनीति और मूल्य विचारों एवं सदुपदेशों का उद्धरण देना।

(7) आचारनीति और मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रसार कार्यक्रम।

4-6 mPprj 'kf{kd lLFkku e ekuoh; eY;k vkj 0;kolkf;d vkpkjuhfr d dk;kUo;u dh dk;ç.kkyh

(1) प्रशिक्षण / कार्यशाला

(2) व्याख्यान

(3) चर्चा
(4) प्रदर्शन
(5) नाटकीकरण
(6) लघु फिल्म
(7) किसी दी गई स्थिति/समस्या में मूल्यों को वर्गीकृत करने के लिए मूल्य स्पष्टीकरण दृष्टिकोण
(8) मूल्यों से परिपूर्ण घटनाओं से परिचित होना
(9) फील्ड निरीक्षण आदि
(10) आत्म–विकास
(11) अध्ययन–चक्र
(12) मूल्य–उन्मुख खेलकूद
(13) समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना
(14) सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेना
(15) सांस्कृतिक गतिविधियाँ
(16) मामले का अध्ययन

4-7 ekuoh; eY;ksa vkj 0;kolkf;d vkpkjuhfr dh fy, fuxjkuh r=

(1) मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के समावेश के लिए समीक्षा बैठक।
(2) उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति की मूल्य लेखापरीक्षा।
(3) प्रतिपुष्टि (Feedback) रिपोर्ट।

4-8 ekuoh; eY;ksa vkj 0;kolkf;d vkpkjuhfr dk eu esa cBkus dh fy, lLFkkxr LFkkiuk

(1) उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति की राष्ट्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन, निगरानी, समीक्षा करने की कार्यनीतियों को संचालित करने के लिए राष्ट्रीय मानवीय मूल्य और व्यावसायिक आचारनीति केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता है। यह केंद्र देश भर के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों की गतिविधियों का समन्वय करेगा।
(2) क्षेत्रीय केंद्रः राज्य के एक केंद्रीय विश्वविद्यालय में राज्य–वार क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए जाएंगे। ये क्षेत्रीय केंद्र निकटवर्ती उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के क्रियाकलापों का समन्वय करेगें।
(3) सभी उच्चतर शैक्षिक संस्थान मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के कार्यान्वयन के लिए इसके संस्थागत स्तर पर एक मूल्य अधिकारी नामित करेगें।

नैतिक मूल्यों संबंधी सही शिक्षा से समाज और देश की उन्नति होगी।

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

अध्याय – V

l|–<hdj.k

सुदृढ़ीकरण मनोविज्ञान के व्यवहारवाद द्वारा प्रतिपादित महत्वपूर्ण युक्ति है। यह मुख्य रूप से वांछनीय कारणों को सुदृढ़ करने के साथ–साथ अवांछनीय कारणों को कमजोर करने से भी संबंधित है।

उच्चतर शिक्षा के संस्थानों में मूल्य–आधारित प्रबंधन की संरचना और आचारनीति व्यवहार को सुदृढ़ करने हेतु, उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए अविरत प्रयासों की आवश्यकता है। हितधारकों के लिए मूल्य और आचारनीति तथा मूल्यों और नैतिक व्यवहारों के लिए परिचालन दिशानिर्देश को निम्नलिखित जारी उपायों का पालन करके और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है:

(1) हम जो भी विषय पढ़ाते हैं, चाहे यह कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन, इंजीनियरिंग, मेडिसिन, ललित कला, आतिथ्य, व्यापार एवं शिल्प आदि हो लगभग सभी विषयों में मूल्यों और आचारनीति के लेंस से चीजों को देखने की गुंजाइश है। शिक्षक को उस दृष्टिकोण से छात्रों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। मूल्य और आचारनीति शिक्षा के लगभग सभी आयामों में गूँथे हुए हैं और इस प्रकार शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि इन पहलुओं को एकीकृत करें।

(2) छात्रों को ज्ञान के किसी शिक्षा क्षेत्र का पता लगाते समय अनुसंधान में आचारनीति के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। अनुसंधान में अनैतिक आचारनीति व्यवहार ज्ञान के शिक्षा क्षेत्र को ही भ्रष्ट और दूषित करेगा।

(3) परिसर प्रशासन के मामले में, सभी आंतरिक हितधारकों को अपनी जवाबदेही को साझा करने के लिए उत्तरदायी महसूस करना अभीष्ट है, चाहे यह शैक्षिक प्रशासक, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र आदि हो।

(4) दो महीने के ब्लॉक में एक बार किसी भी क्षमता में निर्णय लेने वाले अधिकारी आधे घंटे तक टीम के सदस्यों के साथ तथा उस स्थिति का सामना करने के संबंध में अपने अनुभव के बारे में चर्चा कर सकते हैं जिसमें या तो उन्होनें आचारनीति व्यवहारों का अनुपालन किया है या आचारनीति निर्णय लेने में कठिनाई का अनुभव किया इस तरह की चर्चाओं को एक कॉलेजियम वातावरण में कराने की आवश्यकता है। इस तरह के सांझापन का उद्देश्य महज एक दूसरे को सुदृढ़ करना है।

(5) महापुरुषों की जयंती (जैसे विवेकानंद जयंती, रवींद्रनाथ जयंती, रविदास जयंती, अम्बेडकर जयंती, गांधी जयंती, अरबिंदो जयंती, नानक जयंती, तिरुवल्लुवर जयंती आदि) के दिन या एक या दो दिन पहले या इसके बाद ऐसी महान आत्माओं द्वारा दिखाए गए मूल्यों को मन में बैठाने के लिए कोलोक्यूयम आयोजित की जाए।

(6) छात्रों में सद्गुणों को विकसित करने के लिए मूल्यों और आचारनीति पर वर्ष में दो बार आधे दिन की कार्यशाला,का आयोजन किया जाए।

(7) समय–समय पर, छात्रों को वाद–विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, उपाख्यान साझा करने आदि के माध्यम से मूल्यों और आचारनीति के प्रति संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

(8) वर्ष में कम से कम एक बार विभिन्न स्तरों के शैक्षिक प्रशासकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विश्वविद्यालय के संघ कार्यालय पदाधिकारियों और सदस्यों आदि के लिए अलग से एक दिन या दो दिन की मूल्य और आचारनीति कार्यशाला आयोजित की जाए।

(9) प्रख्यात व्यक्तियों, अनुभवी वक्ताओं, पेशावरों, सामाजिक सेवा के प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा मानवीय मूल्यों और आचारनीति के विषय पर भाषण आदि का आयोजन किया जाए।

(10) उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मूल्य–आधारित और आचारनीति संबंधी कार्यों के संवर्धन से संबंधित कार्यक्रमों की समय–समय पर समीक्षा की जाए।

> **'एकता के बिना जनशक्ति में बल नहीं होता, जब तक कि इस में उपयुक्त रूप से सामंजस्य और एकजुटता नहीं हो, जब इसमे सामंजस्य और एकजुटता आ जाती है तो यह एक आध्यात्मिक शक्ति बन जाती है।'**
>
> **सरदार वल्लभ भाई पटेल**

vkHkkjkfDr

प्रो. रजनीश जैन, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की सहायता से मूल्य प्रवाह– उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक आचारनीति के समावेश के दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं, प्रो. पवन कुमार सिंह, प्रोफेसर भारतीय प्रबंधन संस्थान (मध्य प्रदेश); प्रो. (श्रीमती) किरण माथुर, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), मनोविज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल; प्रो. ए. आर. त्रिपाठी, समन्वयक मालवीय मूल्य अनूशीलन केंद्र एवं संकाय अध्यक्ष (डीन), वाणिज्य, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी और डॉ. (श्रीमती) रेणु बत्रा, अपर सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (समन्वयक) इस समिति के सदस्य थे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस दस्तावेज़ को तैयार करने में समिति द्वारा किए गए प्रयासों के लिए आभार व्यक्त करता है और उसकी सराहना करता है।

LoxÊ; çk- voèk'k dekj Çlg] io dyifr] M,- ckck lkgc vEcMdj eä fo'ofo|ky;] vgenkckn vkj v,jk fo'ofo|ky;] ljr] ftUgkus çkjHk es bl lfefr dk vè;{k d :i es dk;l fd;k] mud ;kxnku dk fy, vR;r vkHkkj 0;ä fd;k tkrk g vkj ljkguk dh tkrh gA

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

सत्यमेव जयते

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

गुणवत्ता अधिदेश

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

उद्देश्य

- छात्रों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार
- छात्रों का समाज / उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य
- छात्रों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल
- यह सुनिश्चित करना कि शिक्षक रिक्तियाँ स्वीकृत क्षमता से 10% से अधिक न हों
- वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान को न्यूनतम 2.5 का NAAC स्कोर अर्जित करना ह

उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा निम्नलिखित पहल की जानी हैं :-

1. विद्यार्थियों के लिए आरंभिक प्रेरण कार्यक्रम-दीक्षारंभ।
2. अध्ययन- निष्कर्ष आधारित पाठ्यक्रम रचना-नियमित अंतराल पर पाठ्यक्रम में परिशोधन (LOCF)।
3. प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना -MOOC, और ऑनलाइन उपाधियाँ।
4. विद्यार्थियों हेतु व्यावहारिक कौशल-जीवन कौशल
5. प्रत्येक संस्थान हेतु समाजिक एवं उद्योग वर्ग से संपर्क, प्रत्येक संस्थान, ज्ञान के परस्पर आदान-प्रदान तथा ग्रामीण समुदायों की समग्र सामाजिक/आर्थिक समुन्नति हेतु कम से कम 5 गावों का अभिग्रहण करेगा। नियोजन योगयता में सुधार करने के लिए विश्वविद्यालय-उद्योग के बीच संपर्क को बढ़ावा देना।
6. परीक्षा प्रणाली में सुधार-परिकल्पना की जांच एवं अनुप्रयोग।
7. पाठ्यक्रम के पूरा होने के पश्चात, विद्यार्थि प्रगति की जानकारी रखना व पूर्व छात्र नेटवर्क।
8. संकाय प्रेरणा कार्यक्रम (FIP) शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या कार्यक्रम (ARPIT) तथा शिक्षा प्रशासकों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण (LEAP)।
9. भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए परा-विद्या संबंधी अनुसंधान योजना (STRIDE) और कन्सोर्टियम फॉर एकेडेमिक एंड रिसर्च एथिक्स (CARE)
10. गैर प्रत्यायित संस्थानों को मार्गदर्शन उपलब्ध कराना (परामर्श)

उच्चतर शिक्षा संस्थान (HEIs) गुणवत्ता सुधार हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को 2022 तक प्राप्त करने का प्रयास करेंगे

विद्यार्थियों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार, जिससे की उनमें से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थी अपने लिए रोजगार/ स्व-रोजगार सुरक्षित कर सकें, या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाएँ।

विद्यार्थियों का समाज/उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य स्थापित करना जिससे कि कम से कम दो-तिहाई छात्र, संस्थानों में अपने अध्ययन के दौरान, सामाजिक गतिविधियों मे भागीदारी कर सकें।

विद्यार्थियों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल का प्रशिक्षण प्रदान करन जैसे सामूहिक कार्य, सम्प्रेषण कौशल, नेतृत्व कौशल, समय-प्रबंधन कौशल आदि मे पारंगत करना, मानवीय मूल्यों एवं व्यवसायगत नीतियों का संचार करना, नवप्रवर्तन / उद्धमशीलता तथा विद्यार्थियों मे समालोचनात्मक चिंतन की भावना को जाग्रत करना तथा इन प्रतिभाओं के प्रदर्शन के लिए अवसर प्रदान करना।

यह सुनिश्चित करना की शिक्षक रिक्तियों में किसी भी समय पर, स्वीकृत क्षमता के 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि नहीं हो तथा शत-प्रतिशत शिक्षक अपने संबन्धित ज्ञान क्षेत्र में नवीनतम एवं उभरती जानकरियों एवं शिक्षण विधियों का ज्ञान रखते हों, जिससे वो विद्यार्थियों को प्रभावशाली तरीके से विषय को समझा सकें।

वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान, न्यूनतम 2.5 प्राप्तांकों सहित राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा प्रमाणित हो।

उच्चतर शैक्षिक संस्थानों द्वारा की जाने वाली पहल

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

University Grants Commission

quality higher education for all

www.ugc.ac.in

@ugc_india